Conclusion

उपसंहार

अध्ययन के निष्कर्ष, उपलब्धियाँ और सम्भावनाएँ

उपसंहार

अध्ययन के निष्कर्ष, उपलब्धियाँ और सम्भावनाएँ

नयी कविता का व्यापक एवं समग्र अध्ययन हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि नयी कविता का उद्‌भव एवं विकास यद्यपि महानगरीय एवं यान्त्रिक सभ्यता के विस्तार के दौर में हुआ परन्तु उसकी मूल संवेदना ग्राम्य–संस्कृति एवं वहाँ के जनजीवन से जुडी हुई है वैज्ञानिक प्रगति एवं भौतिक संसाधनों के अतिशय विस्तार ने नयी कविता काव्यधारा को वाह्य रूप से प्रभावित अवश्य किया पर उसकी मूल चेतना लोकोन्मुखी ही बनी रही। नयी कविता का नयापन परम्परा और आधुनिकता, महानगर बोध और ग्राम्य–चेतना, युग जीवन की व्यापकता और रचनाकार की आत्मनिष्ठा तथा कथ्य संदर्भों की विविधता की पृष्ठभूमि में जन्मा है। नयी कविता का रचना फलक अत्यन्त व्यापक है। इसमें मानव की लघुता और गरिमा, घोर नैराश्य और सुखद भविष्य की मंगल कामना, मृत्युंजयी कालबोध और क्षण की स्वीकृति, प्राकृतिक परिवेश के प्रति गहरी संपृक्ति, उन्मुक्त चिन्तन एवं दायित्व बोध, चिरन्तन मानवीय मूल्यों के प्रति अगाध निष्ठा और मानव नियति से जुड़ी स्थितियों से लोहा लेने की अदम्य आकांक्षा का व्यापक रिरूपण हुआ है। नयी कविता में पौराणिक प्रतीक, लोक जीवन तथा ग्राम्य परिवेश में प्रचलित शब्दावली, धरती की सोंधी गन्ध की प्रतीति कराने वाली सुन्दर उत्प्रेक्षाएँ, रमणीय प्राकृतिक परिवेश से सम्पृक्त बिम्ब, यथार्थ के धरातल से जुड़ी कल्पनाएँ और मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी रचनादृष्टि उसकी रचनात्मकता एवं लोकोन्मुखी दृष्टि को स्वीकारने को बाध्य करती है। ग्राम्य–संस्कृति वहाँ का सघन प्राकृतिक परिवेश, ग्राम्यांचलों से जुड़ी स्थानीय परम्परायें, लोक विश्वास, लोकोत्सव, मनौतियाँ, व्रत–उपवास, लोक गीतों एवं लोक धुनों पर आधारित गीतों की रचना करके नयी कविता के कवियों ने ग्राम्य परिवेश को जीवंत रूप में उभारा है।

लोकोन्मुखता के अभाव में कोई भी काव्यधारा लम्बे समय तक जीवित नहीं रह सकती है। नयी कविता ने एक तरफ जहाँ औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप विकसित शहरी संस्कृति की विडम्बनाओं, एवं संत्रास को चित्रित किया है वहीं दूसरी तरफ उसने ग्राम्य–संस्कृति एवं वहाँ की सतरंगी प्राकृतिक छवियों को जीवंत रूप में उभारा है। नये कवियों ने अपनी कविताओं में गाँव की गंध, मजदूर की महक, ग्रामीण समाज की विडम्बनाओं गरीबी, भुखमरी, अभाव, शोषण, बाढ़, अकाल आदि समस्याओं को समग्र रूप में सशक्तता के साथ अभिव्यक्त किया है। नयी कविता लोक तथा यथार्थ की ओर उन्मुख होने के साथ–साथ जीवन की विशिष्टताओं से सम्पृक्त है। मानव के समक्ष जो विषमता और तिक्तता है उसी को नयी कविता रुपायित कर रही है। जीवन का वैविध्यमयचित्र नयी कविता ने प्रस्तुत किया है। यथार्थ के समस्त सौन्दर्य, कुरूप, रंगीन और विद्रूप को वह वाणी दे रही है। नयी कविता ने ग्राम्य जीवन की विविध छवियों को जनभाषा में अभिव्यक्ति दी है। नयी कविता की प्रकृतिपरक छवियों में नगरीय, ग्रामीण और आँचलिक सभी का परिवेश प्रस्तुत किया गया है। लोक–सम्पृक्ति के कारण नयी कविता का प्रकृति पक्ष अधिक प्रभावी और आकर्षक है।

नयी कविता में मनुष्य और उसके समग्र अनुभव को पकड़ने का यत्न हुआ है। नयी कविता में समग्र मनुष्य की ही बात नहीं कही गयी, बल्कि मनुष्य के समग्र अनुभव खण्डों को संयोजित किया गया है। इस तरह नयी कविता में समग्र मनुष्य अपने समग्र अनुभव में जीवंत है। मनुष्य को केन्द्र में रखकर उस पर किये गये चिंतन में नयी कविता का गुणात्मक योगदान है।

वैज्ञानिक प्रगति तथा यन्त्रवाद के इस दौर में मानव समाज में व्यापक परिवर्तन घटित हो रहे हैं। भौतिकवादी प्रवृत्ति तथा अतिशय व्यावसायिक प्रसार के कारण आधुनिक युग में मानवीय सम्बन्धों में भी व्यावसायिकता घर करती जा रही है। मानवीय सम्बन्धों में आत्मीयता तथा रागमयता के स्थान पर शुष्कता नीरसता तथा हृदयहीनता व्याप्त होती जा रही है। भौतिकवाद तथा यन्त्रवाद का

सर्वाधिक प्रसार महानगरीय सभ्यता में हुआ है, इसलिए यान्त्रिकताजन्य विभीषिकाओं तथा संत्रास से सर्वाधिक प्रभावित भी महानगरीय सभ्यता ही हो रही है। ऐसे में लाभ आधारित उद्योग प्रधान सभ्यता में मानवीय सम्बन्धों में व्याप्त शुष्कता एवं संवेदनहीनता को मिटाने में ग्राम्य जीवन और वहाँ की संस्कृति में व्याप्त आपसी सौहार्द्र, भाईचारा तथा प्रेम और सहानुभूति की भावना अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है। कृषि आधारित ग्राम्य–सभ्यता में आज भी मानवीय सम्बन्धों में आत्मीयता एवं गहरी रागात्मकता के दर्शन होते हैं। महानगरीय जीवन की विभीषिकाओं, तनावों एवं संत्रास से त्रस्त आधुनिक कालीन इस दौर में जन्मी नयी कविता में लोकोन्मुखता का पाया जाना, यान्त्रिकता तथा भौतिकता से बोझिल मानव सभ्यता में उम्मीद की एक नई किरण पैदा करता है। ग्राम्य जीवन में आज भी हमारी गौरवमयी प्राचीन संस्कृति के तत्व, आदर्श परम्परायें धरोहर रूप में संरक्षित हैं; नयी कविता के कवियों ने ग्राम्य परिवेश एवं वहाँ की वैविध्यमय प्रकृति का बहुआयामी चित्रण करके अपनी जड़ों की तरफ वापसी का संकेत दिया है। जो नयी कविता काव्यधारा की एक बड़ी उपलब्धि है। नयी कविता के समग्र चिंतन और कार्य में मानव मात्र को भौतिकवाद और यंत्रवाद से मुक्त करवाने की ईमानदार और उदार आकांक्षा निहित है। यान्त्रिक विकास की अंधी दौड़ से हलाकान मानव के लिए नयी कविता ने सांस्कृतिक विकास की संभावनाओं का द्वारा उद्‌घाटित किया है, जिससे बुद्धि और हृदय के सामंजस्य से मानव सभ्यता विकास के नूतन पथ पर अग्रसर हो सके।

□□□□□